साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

अप्रैल 2013 वर्ष 18, अंक 4

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस

प्रत्येक वर्ष **23 अप्रैल** को विश्व भर में **विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस** मनाया जाता है। यूनेस्को (UNESCO) द्वारा आयोजित इस दिवस का उद्देश्य पठन एवं प्रकाशन को प्रोत्साहित करना एवं बौद्धिक संपदा को कॉपीराइट के द्वारा संरक्षा प्रदान करना है। विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस सन् 1995 से प्रति वर्ष मनाया जाता है।

18 मील तक किताबें ही किताबें!

अजब, अनोखा, अविश्वसनीय, लेकिन सच! अमेरिका के शहर न्यूयॉर्क में एक ऐसा पुस्तक केंद्र है जहाँ पाँच मंजिलों में किताबें-ही-किताबें भरी पड़ी हैं– किताबें, तरह-तरह की, दुर्लभ किताबें भी। स्ट्रैंड बुक स्टोर नामक यह पुस्तक केंद्र 83 साल पुरानी है। न्यूयॉर्क के ब्रॉडवे एंड ईस्ट-12 स्ट्रीट के एक बिल्डिंग के पाँच मंजिल सिर्फ इसी केंद्र के मालिक के कब्जे में है। छतें

पृ. सं. 2 पर जारी ...

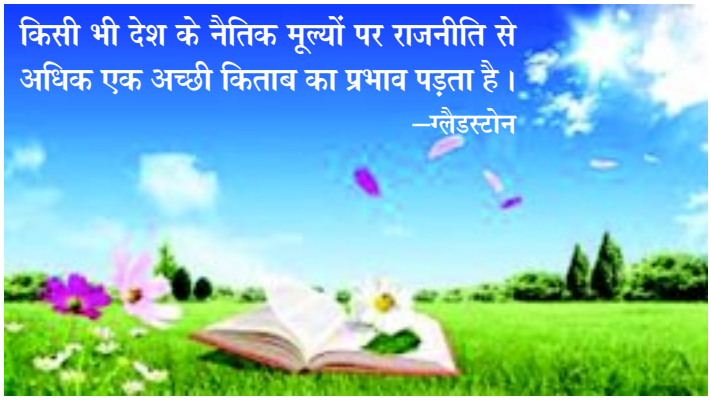

पुस्तकें

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

(कवि संप्रति साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष हैं। –संपा.)

नहीं, इस कमरे में नहीं
उधर / उस सीढ़ी के नीचे
उस गैरेज के कोने में ले जाओ / पुस्तकें
वहाँ, जहाँ नहीं अँट सकती फ्रिज
जहाँ नहीं लग सकता आदमकद शीशा

बोरी में बाँधकर / चट्टी से ढककर
कुछ तख्ते के नीचे / कुछ फूटे गमले के ऊपर
रख दो पुस्तकें

ले जाओ इन्हें तक्षशिला-विक्रमशिला
या चाहे जहाँ
हमें उत्तराधिकार में नहीं चाहिए पुस्तकें
कोई झपटेगा पासबुक पर
कोई ढूँढ़ेगा लॉकर की चाभी
किसी की आँखों में चमकेंगे खेत
किसी में गड़े हुए सिक्के

हाय-हाय, समय!
बूढ़ी दादी-सी उदास हो जाएँगी
पुस्तकें

पुस्तको! / जहाँ भी रख दें वे
पड़ी रहना इंतजार में
आएगा कोई न कोई / दिग्भ्रमित बालक जरूर
किसी शताब्दी में
अँधेरे में टटोलता अपनी राह
स्पर्श से पहचान लेना उसे
आहिस्ते-आहिस्ते खोलना अपना हृदय
जिसमें सोया है अनंत समय
और थका हुआ सत्य / दबा हुआ गुस्सा
और गूँगा प्यार
दुश्मनों के जासूस
पकड़ नहीं सके जिसे।

आज पुस्तकों के हमारे जीवन और घरों से निर्वासन की विडंबनापूर्ण स्थिति पर वरिष्ठ कवि की करुणापूर्ण चिंता *–संपा.*

ऊँची होने की वजह से बुक शेल्फ ढाई मीटर ऊँचे हैं जहाँ तक पहुँचने के लिए सीढ़ी का इस्तेमाल करना होता है। पुस्तकें 18 मील यानी 30 किलोमीटर में फैली हैं। स्टोर के 'लोगो' पर लिखा है–18 माइल्स ऑफ बुक्स।

यह पुस्तक केंद्र एक परिवार द्वारा संचालित है। यह हर तरह की पुस्तकों का ठिकाना है। सभी पुस्तकों पर छूट का प्रावधान है। यहाँ नई पुस्तकों एवं दुर्लभ पुस्तकों के अलावा अब मुद्रित नहीं हो रही पुस्तकों के संस्करण भी हैं। केंद्र ने अपने ग्राहकों और प्रख्यात लोगों के लिए पुस्तकालय भी तैयार किया है। स्टोर के सभी कर्मचारी 'डिग्री होल्डर' हैं और प्रायः वे सभी साहित्य विषय के छात्र-छात्राएँ हैं। "हम सिर्फ पुस्तक बेचते ही नहीं हैं बल्कि हमें पुस्तकों से प्यार भी है।" स्टोर के मालिक कहते हैं।

स्टोर में प्रतिदिन लगभग 8 हजार लोग आते हैं जिनमें विदेशी भी होते हैं। ज्यादातर ग्राहक वैसे होते हैं जो उन पुस्तकों की तलाश करते हुए यहाँ आ पहुँचते हैं जिन्हें वे अपने राज्य या देश में नहीं ढूँढ़ पाए। इस स्टोर से ऑर्डर पर विदेशों में भी पुस्तकें भेजी जाती हैं। पुस्तकें ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं। स्टोर की तीसरी मंजिल पर अनोखी और दुर्लभ किताबों से भरा एक कमरा सबसे अधिक पसंदीदा कमरा है।

स्टोर की खास बात यह है कि ग्राहक पुस्तक पढ़कर स्टोर को पुनः बेच देते हैं। बच्चों की पुस्तकों का एक अलग और भव्य डिपार्टमेंट है। सप्ताह में एक दिन 'फैमिली आवर' रखा गया है। इसमें बच्चों के लिए पुस्तकों का पाठ होता है।

इंटरनेट के हमले पर स्टोर-मालिक का कहना है–"पुस्तकें अभी तक मरी नहीं हैं। पुस्तकों का पढ़ना खत्म नहीं हुआ है। भविष्य से हमारी बड़ी उम्मीदें हैं।"

इस स्टोर से हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए।

किताब के बारे में

'एक लड़की जिसे किताबों से नफरत थी'

यह किताब मंजूषा पावगी ने लिखी है। भारत ज्ञान-विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित इस किताब में मीना नाम की एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसे किताबों से बेतरह नफरत थी। वह कहती थी–किताबें हमेशा बीच में अड़ंगा डालती हैं। लेकिन उसे किताबों से प्यार हो जाता है। कैसे? काल्पनिक और रोचक है पूरी कहानी।

मीना को किताबों से जितनी नफरत थी उसके माता-पिता को उतना ही लगाव था किताबों से। घर में हर जगह किताबें-ही-किताबें। बुकशेल्फ में, दराज में, अलमारी में, सीढ़ियों पर, यहाँ तक कि फ्रिज और वाश बेसिन तक में किताबें। तुर्रा यह कि मीना के माता-पिता इतनी किताबों के बावजूद हर रोज और नई-नई किताबें लाते जाते। किताबों का यह हाल था कि कुछ सामान उतारना हो तो किताबों के ढेर पर चढ़कर सामान उतार लिया जाता। ऐसे ही एक दफा किताबों के ढेर पर चढ़ते हुए मीना गिर पड़ी–धड़ाम! दरअसल, मीना अपनी बिल्ली मैक्स को खोजते हुए किताब के टीले पर चढ़ रही थी।

मीना का गिरना था कि सारी किताबें इधर-उधर उड़ने लगीं। किताबों की जिल्द खुली और पन्ने पलटने लगे। ज्यों-ज्यों पन्ने पलटते इनमें से तरह-तरह के पशु-पक्षी निकलने लगे। राजकुमार, राजकुमारियाँ और बूढ़ी औरत भी। खरगोश सबसे अधिक थे। 'मुझे तो लगता था किताबों में सिर्फ शब्द होते हैं, खरगोश नहीं।' मीना बुदबुदाई। डायनिंग रूम, जिसमें यह हादसा हुआ, में बंदरों ने ऊधम मचा दिया, पर्दे फाड़ डाले, हाथी एक पाँव पर नाचने लगे, खरगोश मेज के पाँव चबाने लगे।

मीना घबरा गई। सोचा, सब जानवरों को उन किताबों में ठूँस दूँ जिनमें से वे निकली हैं। वह किताब पढ़ने लगी। वह बारी-बारी से किताब पढ़ती जाती और जो-जो जानवर या चिड़िया या अन्य पात्र जहाँ से निकले थे उस किताब में समाने लगे। अंत होते-होते खरगोश भी अपनी किताब में घुस गए। मीना चाहती थी कि एक खरगोश उसके पास रहे।

लेकिन इस घटना का फल यह निकला कि मीना किताब पढ़ने लगी। जब उसके माता-पिता घर में आए तो घर को तितर-बितर और बेहाल देखकर उतने हैरान नहीं हुए जितना मीना को किताब पढ़ते हुए देखकर हुए।

संदर्भ : पंचायती राज दिवस, 24 अप्रैल

संविधान के 73वें संशोधन एक्ट, 1992 के द्वारा पंचायती राज में बड़े परिवर्तन हुए। इसी के दृष्टिगत 2011 से यह मनाया जाता है।

संदर्भ : पृथ्वी दिवस, 22 अप्रैल

पर्यावरण जागरूकता के लिए यह दिवस मनाया जाता है। इस दिन जल, जमीन और हवा की सुरक्षा की शपथ ली जाती है।

संदर्भ : जल संसाधन दिवस, 7 अप्रैल

वर्षा का जल बह न जाए
करो सभी संकल्प
छत का पानी संचय करके
पूर्ण करो संकल्प।

संदर्भ : विश्व स्वास्थ्य दिवस, 7 अप्रैल

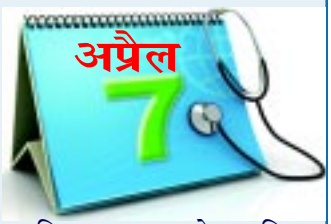

इस दिवस का उद्देश्य विश्व भर में आम लोगों के स्वास्थ्य के प्रति चिंतन एवं जागरूकता का विकास करना है।

संदर्भ : बोहाग बिहू

बिहू : असम का सबसे बड़ा त्योहार

भारत के हर राज्य का अपना कोई खास पर्व या त्योहार होता है। 'बिहू' भी एक ऐसा ही त्योहार है जो असम के लोग मनाते हैं। इसे बच्चे, बूढ़े, स्त्रियाँ एवं युवा–सभी बड़े उमंग और उल्लास से मनाते हैं। इसमें जाति, धर्म, ऊँच-नीच का बंधन नहीं होता। बिहू का संबंध सामान्य तौर पर वसंत काल के 'बोहाग बिहू' से है, मगर असम के लोग एक नहीं, तीन बिहू मनाते हैं। ये तीनों बिहू एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अप्रैल के मध्य में मनाया जाने वाला 'बोहाग बिहू' असम का सबसे महत्वपूर्ण बिहू होता है। वस्तुतः बोहाग बिहू वसंत, नववर्ष व कृषि–इन तीनों का त्योहार है। 'बोहाग' असम पंचांग का पहला और 'चोत' अंतिम महीना है। इस प्रकार बोहाग बिहू नए वर्ष के आगमन का सूचक है। बोहाग बिहू खेती-बाड़ी आरंभ करने का भी प्रतीक है। इस त्योहार पर होने वाले समारोह भी कृषि से संबंधित होते हैं। इस त्योहार में लोग नाचते हैं, गाते हैं और मनोरंजन करते हैं।

बोहाग बिहू से संबंधित एक गीत है :

अतिकोई सेनेहर मुगारे महुरा
तातोकोई सेनेहर माको,
तातोकोई सेनेहर बोहगर बिहुटी
नेपाति केनेकोई थाको।

(मुगा फिरकी प्रिय है, उससे भी प्रिय है भरनी, पर इससे भी अधिक प्रिय है बोहाग बिहू; हम इसे क्यों न मनाएँ?)

बिहू के पहले दिन को 'गोरु बिहू' कहते हैं। इस दिन पशु-सेवा, विशेषकर घरेलू पशुओं की, की जाती है। पशुओं को फूलों से सजाया जाता है, इन्हें नया पगहा बाँधा जाता है। नदी या ताल पर गउओं को नहलाया जाता है। मंदिर में पूजा-अर्चना की जाती है, छोटे बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। बोहाग का पहला दिन 'मानुह बिहू' कहलाता है। बिहू पर विशेष भोजन की प्रथा है, जिनमें चिवड़ा, दही व मिष्टान्न प्रमुख हैं। इस अवसर पर उपहार देने की भी प्रथा है, जिसे 'बिहुवान' कहते हैं। उपहार में विशेषकर 'गामोचा' (गमछा) दिया जाता है। उपहार में अन्य वस्तु भी हो सकते हैं। बिहू के तीसरे दिन को अकसर 'गोहाई बिहू' कहा जाता है। इस दिन धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। बिहू के सातवें दिन, जिसे 'हात बिहू' कहते हैं, का अपना महत्व है। इस दिन 7 किस्म की शाक-सब्जियाँ पकाकर खाने का रिवाज है। खेल-कूद बिहू का महत्वपूर्ण अंग है। इस अवसर पर 'कनिजुज' नामक विशेष खेल का आयोजन होता है। स्त्रियाँ कौड़ियाँ खेलती हैं। 'घोप' और 'हाउ' भी खेले जाते हैं। बिहू उत्सव के तुरंत बाद मेले भी लगते हैं।

दो अन्य बिहू क्रमशः जनवरी और अक्तूबर में मनाए जाते हैं। माघ बिहू खेती की उपज से संबंधित है। इसे 'भोगाली बिहू' भी कहते हैं। काति बिहू एक दिन का त्योहार है। इसे 'कंगाली बिहू' भी कहते हैं। इस अवसर पर आँगन में तुलसी की पूजा की जाती है।

बच्चों को अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा

1 अप्रैल, 2013 को सारे देश में बच्चों को अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा के मौलिक अधिकार बनने के 3 साल पूरे हो गए। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 2010 में इस अनूठी पहल की घोषणा की थी। इस पहल से देश के उन 90 लाख से अधिक बच्चों को लाभ हो रहा है जो स्कूल नहीं जाते। ड्रॉपआउट बच्चे पुनः स्कूल जाने लगे हैं।

उज्जैन में 'गाँव की बेटी' का लोकार्पण

एनबीटी से प्रकाशित *गाँव की बेटी* (नवसाक्षर सा. मा.) शीर्षक पुस्तक के लोकार्पण का दृश्य। पुस्तक के लेखक संदीप सृजन। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. रामराजेश मिश्र, पूर्व कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय ने की। दिनांक : 24 मार्च, 2013

जन्मदिन स्मरण

माखनलाल चतुर्वेदी
4 अप्रैल

भीमराव आंबेडकर
14 अप्रैल

पुण्यतिथि स्मरण

मंगल पांडे
8 अप्रैल

वीर कुंवर सिंह
23 अप्रैल

श्रीनिवास रामानुजन
26 अप्रैल

डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध' का 14 मार्च, 2013 को निधन हो गया। वे सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार एवं पत्रकार थे। **साक्षरता संवाद** में उनकी रचनाओं का प्रकाशन होता रहा है। उनका जन्म 14 जनवरी, 1939 को जयपुर में हुआ था।

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर काव्यमयी प्रस्तुति

सबकी प्यारी पुस्तक

पुष्कर द्विवेदी

जो है देती ज्ञान की दस्तक
वो है मेरी प्यारी पुस्तक
दूर अकेलापन यह करती
स्वस्थ मनोरंजन भी करती
हाथों में रहती यह जब तक
ऐसी मेरी प्यारी पुस्तक।

छोटे-बड़ों सभी को भाती
भेदभाव न इसको आती
साथ यह देती मरते दम तक
जीवन साथी प्यारी पुस्तक।

जानकारियों का यह खजाना
इसने-उसने, सबने माना
करे समाज में ऊँचा मस्तक
वो है सबकी प्यारी पुस्तक।

इटावा, उ.प्र.

किताब

अनिरुद्ध प्रसाद विमल

यह किताब होती सदा, केवल गुण की खान
इस किताब को पढ़ मनुज, होता है विद्वान।

देखो पढ़ो किताब में, आखर-आखर ज्ञान
पढ़ते-पढ़ते ही बना, आज मनुज गुणवान।

खोजो पढ़ो जहाँ मिले, गीता, वेद, कुरान
इन ग्रंथों में है भरा, सव्य-शील भगवान।

बीते जीवन का सही, करना कभी हिसाब
इस हिसाब से है बड़ी, सच्ची एक किताब।

युगों से है रहा सदा, इस किताब का मान
है जग में गुणवान जो, सच्चा वह धनवान।

राह भटककर जब कभी, होता मनुज खराब
कर सचेत सद्राह पर, लाती यही किताब।

कर्मशील गुणवान को, दे किताब सद्राह
पढ़ो-पढ़ो जितना पढ़ो, नहीं मिटेगी चाह।

दीन-दलित आवाज की, है किताब हथियार
है जीवन संघर्ष की, यह किताब औजार।

पुनसिया, बाँका, बिहार

पुस्तक तो उपदेश देती

गोपीनाथ कालभोर

जीवन को परिवेश देती
पुस्तक तो उपदेश देती
सुख-दुख की सच्ची है साथी
मदहोशों को होश देती।
ज्ञानार्जन से हर व्यक्ति को
बना वह दरवेश देती
वह व्यक्ति को आगे क्रमशः
बढ़ने का अनुदेश देती।
प्यारी पुस्तक न्यारी पुस्तक
सलीके का निदेश देती
घर में रखना अच्छी पुस्तक
अवसर वह विशेष देती।

खंडवा, म.प्र.

ज्ञान-गठरी पोथियाँ

भगवती प्रसाद गौतम, कोटा, राजस्थान

हों हरी, पीली सुनहरी पोथियाँ
हैं सरासर ज्ञान-गठरी पोथियाँ।

चुप रहें बहुधा मगर जब मुँह खुले
बाँट जातीं सीख गहरी पोथियाँ।

जो दिखा अनपढ़ उसी के शीश पर
तन चलीं बन छाँव-छतरी पोथियाँ।

गा-बजा लो, खूब रट लो, बाँच लो
पर न समझो हैं कि बहरी पोथियाँ।

जब चलें, दीए जलाती ही चलें
कब कहीं बेकार ठहरी पोथियाँ।

छल, कपट, अन्याय की खातिर हुईं
जागती-जीती कचहरी पोथियाँ।

सार जीवन का संजोए हर कदम
छलछलातीं प्रेम-गगरी पोथियाँ।

कौम का इतिहास युग-युग से गढ़ें
सभ्यता की खास प्रहरी पोथियाँ।

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर काव्यमयी प्रस्तुति

किताब

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

किताब का ना
कोई जवाब
पढ़ना इसको
जरूर जनाब।

किताब कराती
सैर-सपाटा
इसको पढ़कर
न कोई घाटा।

इज्जत इसकी
जो है करता
खुशियों की वह
झोली भरता।

किताब तो है
ज्ञान बढ़ाती
सच्चा मार्ग
यह दिखलाती।

यह तो चीज
बड़ी अनमोल
बंद आँखों को
देती खोल।

इस बराबर
न कोई साथी
कहते इसको
अद्‌भुत दाती।

सिहाल, कांगड़ा, हि.प्र.

पुस्तक सच्चा साथी है

रूपनारायण काबरा

जो पुस्तक पढ़ सकता है
वह सब कुछ कर सकता है
ज्ञान बढ़ाती, हमें सिखाती
देश, जगत के हाल बताती।

जीवन की राह दिखाती है
हमको सम्मान दिलाती है
जब हमको पढ़ना आता है
विश्वास हमारा जग जाता है।

जीवन में सब कुछ कर पाते
नाटक, कविता और कहानी
सब कुछ ही हम पढ़ पाते
गीता, भागवत भी पढ़ पाते।

धर्म, ज्ञान को भी जानेंगे
खुशियों के दीप जलाएँगे
मात पिता बहना भ्राता है
इसका ऐसा ही नाता है।

निपट अनाड़ी रह जाता है
जिसको पढ़ना न आता है
ज्ञान बढ़ाए, मान बढ़ाए
जीवन को यह सफल बनाए।

पुस्तक सच्चा साथी है
सुख-दुख का पक्का साथी है।

जयपुर, राजस्थान

प्यारी-प्यारी अच्छी पुस्तक

डॉ. लक्ष्मी विमल

प्यारी-प्यारी अच्छी पुस्तक
ज्ञान बढ़ाती अच्छी पुस्तक।
सत्य अहिंसा और प्रेम का
राह दिखाती अच्छी पुस्तक।
मात-पिता और गुरु हैं देव
यही सिखाती अच्छी पुस्तक।
अल्लाह ईश्वर दोनों ही को
एक बताती अच्छी पुस्तक।
रंज व गम की भीड़ में अकसर
मन बहलाती अच्छी पुस्तक।
पास से अपने तनहाई को
दूर भगाती अच्छी पुस्तक।
रोचक-रोचक कथा-कहानी
सदा लुभाती अच्छी पुस्तक।
मानवता और देश प्रेम का
पाठ पढ़ाती अच्छी पुस्तक।

डालटनगंज, पलामू, झारखंड

पुस्तक की शोभा है न्यारी
पुस्तक है विवेक की क्यारी
पुस्तक से जीवन खिल जाता
हर बुराई पुस्तक से हारी।
प्रो. शरद नारायण खरे,मंडला, म.प्र.

नई सोच को पहचान दो
किताबों को तुम मान दो
जीवन-सफर में साथी होगी
किताबों पर तुम जान दो।
सुरेंद्र 'अंशुल', अम्बाला, हरियाणा

किताबें, हीरा मोती
किताबें, ज्ञान की ज्योति
किताबों में, संसार समोया
किताबें, देश की थाती।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

अच्छी पुस्तक है ज्योति का प्रकाश
एक-दूजे के अंतस का विकास
सुरभित स्नेहधारा का अहसास
जीवनपर्यंत संपूर्णता का आभास।
डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

एक अच्छी पुस्तक सर्वोत्तम मित्र है—आज जैसा, कल भी वैसा ही। —मार्टिन टपर

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : मार्च '13 :** अंक होली के रंगों की तरह सामग्री और स्वरूप में इंद्रधनुषी बन मन-मस्तिष्क को मधुर-मधुर अहसास से भर गया। महिला दिवस-केंद्रित रचनाएँ समाज में चेतना जगाने में कारगर सिद्ध होगी। **डॉ. राकेश अग्रवाल,** हापुड़, उ.प्र.

☐ महिला दिवस-केंद्रित आलेख और कविताएँ उपयोगी एवं प्रेरणाप्रद थीं। सभी आयु वर्ग के लोग इसे चाव से पढ़ सकते हैं।
बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर, उ.प्र.

☐ बुलंदियों को स्पर्श करने के हौसलों से परिपूर्ण पत्रिका वास्तव में जीवन में कुछ ऐसा करने की सद्प्रेरणा प्रदान करती है जिससे हम अपने भविष्य के प्रति आशान्वित रहते हुए स्वर्णिम अतीत की स्मृति को भी अक्षुण्ण रख सकें।
चहुँओर व्याप्त होगा, राष्ट्र में प्रभाव सद्साहित्य का
होगा प्रसार हर ओर जब, पत्रिका 'साक्षरता संवाद' का।
शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड

☐ फरवरी व मार्च अंक मिले। दोनों ही अंकों में अनेक श्रेष्ठ व सुंदर रचनाएँ थीं। पत्रिका और निखरे, यही कामना है।
प्रकाश भानु महतो, नेंगटासाई, सरायकेला, खरसावाँ, झारखंड

☐ **फर. 2013 :** अंक की सभी रचनाएँ अच्छी थीं, किंतु मलाला पर आलेख तथा सीमा व्यास की लघुकथा ने विशेष प्रभावित किया। ऐसी श्रेष्ठ पत्रिका निकालने के लिए आप बधाई के पात्र हैं।
डॉ. रा. बा. प्रशांत, धर्मशाला, हि.प्र.

☐ पत्रिका में प्रकाशित रोचक, ज्ञानवर्द्धक, उपयोगी और अन्वेषणपूर्ण सामग्री आकृष्ट करती है। मेरी उम्र अब 79 वर्ष की हो चली है किंतु **सा. सं.** की रचनाओं को पढ़ते हुए मैं अपने बचपन में लौट जाता हूँ। विश्व पुस्तक मेला की रिपोर्ट पढ़ी, पर मेला न देख पाने का अफसोस रहा। **पं. बी. एन. मुद्गिल,** रोहतक, हरियाणा

☐ **सा. सं.** दूर-दराज के क्षेत्रों तक अपनी पहुँच से अशिक्षा के अंधकार को मिटा रहा है। सेवानिवृत्त और वरिष्ठ नागरिकों का परम कर्तव्य है कि वे यथासंभव अशिक्षित जनता को शिक्षित करने का भार उठाएँ। **दानबहादुर सिंह,** रीवा, म.प्र.

☐ फरवरी अंक वासंती परिवेश लेकर आया, मन को भाया। नवल जानकारियाँ, धवल ज्ञान, बढ़ गया प्रकाशन के प्रति मन में सम्मान। कविताएँ नई, संदेश नया, विचारों ने मन को छुआ। बधाइयाँ, क्योंकि आप बजा रहे चेतना की शहनाइयाँ।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

☐ विश्व पुस्तक मेला पर रिपोर्ट एवं केदारनाथ सिंह की कविता 'मातृभाषा' तथा तत्विषयक आलेख अच्छा लगा। अन्य रचनाएँ भी अंक में चार चाँद लगाने वाली थीं।
प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

☐ वास्तव में साक्षरता एवं शिक्षा-प्रसार के लिए यह पत्रिका अत्यंत प्रेरक और उपयोगी है। 'जो पढ़े, वो पढ़े' पत्रिका का सर्वहिती संदेश है। **शंकर सुल्तानपुरी,** लखनऊ, उ.प्र.

☐ पत्रिक के हर अंक में निखार है।**डॉ. मालती शर्मा,** पुणे, महाराष्ट्र

☐ पत्रिका में कुछ जानकारी ऐसी भी मिल जाती है जो बड़ों के लिए भी उपयोगी रहती है। **हर्ष कुमार हर्ष,** पटियाला, पंजाब

☐ **सा. सं.** आम जन में साहित्य के प्रति रुचि, पुस्तकों के प्रति आस्था एवं हिंदी भाषा के प्रति सम्मान बढ़ाने का कार्य करता है। उपयोगी और पठनीय यह पत्रिका शुष्क एवं सूखे मन-मरुथल को हरा-भरा करने का कार्य करता है। **विश्वनाथ शर्मा,** भोपाल, म.प्र.

☐ गागर में सागर है **सा. सं.**। महान विभूतियों के स्मरणस्वरूप प्रकाशित आलेख उपयोगी लगते हैं। कविताएँ बोधक एवं प्रेरणाप्रद होती हैं। **कृष्णा अवस्थी,** कांगड़ा, हि.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें—प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** —*संपा.*

अक्षर गीत

शिवचरण चौहान

'क' से कौआ और कबूतर
ककड़ी, कमल, करेला।
'ख' से खरबूजा, खुबानी
खरगोशों का खेला।
'ग' से गणेश, गोवर्धन, गोभी
गागर, गंगा, गैया।
'घ' से घड़ी, घड़ा औ' घंटा
पढ़ता छोटा भैया।
'ङ' और 'ञ' भी पढ़ता
गिनती और पहाड़े।
लिख लेता है, भालू, आलू
केला और सिंघाड़े।

कानपुर, उ.प्र.

चाचा 'चक्र' के साक्षरता पर सचगुल्ले

राकेश 'चक्र'

अनमोल है शिक्षा सदा, पढ़ें-पढ़ाएँ रोज
ये ही ज्ञान का पुंज है, नई हो रहीं खोज
नई हो रहीं खोज, कि जीवन बदल रहा है
अंधकार भी मिटा, आदमी संभल रहा है
कहे 'चक्र' कविराय, कि बोल लें मीठे बोल
पढ़ें-पढ़ाएँ सभी, है सदा शिक्षा अनमोल।

मुरादाबाद, उ.प्र.

आओ, पढ़ें-पढ़ाएँ सबको

इंदिरा सिंह

हम भी पढ़ें, पढ़ाएँ सबको
अक्षर-ज्ञान सिखाएँ सबको
पुस्तक ही जीवन का साथी
इसका मोल बताएँ सबको।
ज्यों-ज्यों हम शिक्षा पा जाते
मूल्यवान हम भी बन जाते
'क' से कर्मवीर बनते हैं
'ख' का ज्ञान कराएँ सबको।
शिक्षा से ही खुशियाँ मिलती
उजियारे की कलियाँ खिलती
शिक्षा से जीवन ऊँचा है
इसका बोध कराएँ सबको।

रतनगढ़, चूरू, राजस्थान

एक को एक पढ़ाए

संतोष सक्सेना

एक को एक पढ़ाए भइया, एक को एक पढ़ाए
तो यूँ समझो, कड़ी-कड़ी जुड़, एक लड़ी बन जाए
ए, बी, सी, डी, अ, आ, इ, ई, क, ख, ग, घ, अंगा
शुरू तो करके देखो, जीवन लगेगा चंगा-चंगा
जगह अँगूठे के दस्तखत, जिस दिन करना आ जाए
उस दिन समझो एक तीर्थ जितना ही पुण्य कमाए।
एक को एक पढ़ाए भइया, एक को एक पढ़ाए
चली गई है दुनिया अब तो, कंप्यूटर से आगे
तुम तो समझो तभी सवेरा, जैसे ही तुम जागे
जो भी पहले जगे वही, जाकर आवाज लगाए
शिक्षा ही वह डगर, जो सबको मंजिल तक पहुँचाए।
एक को एक पढ़ाए भइया, एक को एक पढ़ाए
सभी साक्षर सब ही शिक्षित, जिस दिन हो जाएँगे
स्वर्ग उतार, उसी दिन हम, इस धरती पर लाएँगे
होगा मगर तभी यह जब, हर कड़ी लड़ी बन जाए
ये क्रम ऐसा चले कि जिसका अंत कभी न आए
एक को एक पढ़ाए भइया, एक को एक पढ़ाए।

आगरा, उ.प्र.

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/4/2013

नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नई पुस्तकें

पंछीपुर की परमेसरी पृष्ठ 20 ` 13.00

प्रदीप पंत ISBN 978-81-237-6632-4

परमेसरी पंछीपुर गाँव की पंचायत प्रमुख चुनी गई। उसके पास गाँव के विकास की अनेक योजनाएँ हैं। इनमें पर्यावरण सुधार, नशा मुक्ति आदि काम शामिल हैं। वैसे, जैसा कि आम तौर पर होता है विरोध करने वाले हर जगह होते हैं, परमेसरी की भी आलोचना होती है लेकिन वह निराश नहीं होती। अंततः गाँववालों को वह अपने साथ कर पाने में सफल होती है। गाँव में सफाई एवं अन्य विकास के काम होने लगते हैं।

पुस्तक मेरा मित्र पृष्ठ 36 ` 15.00

कामना झा ISBN 978-81-237-6668-3

दीपक, विक्की आदि अनेक छात्र आपस में दोस्त हैं और साथ ही पढ़ते हैं। दीपक पढ़ाई में और हर बात में लापरवाही करता है, वहीं विक्की पढ़ाई में काफी मेहनती और गंभीर है, साथ ही अपने घर में भी सब कुछ करीने से रखता है। एन्वल डे में जहाँ विक्की को अनेक मेडल मिलते हैं वहीं दीपक को मायूसी हाथ आती है। विक्की अपनी सफलता का राज पुस्तक को बताता है। पुस्तक पठन की प्रेरणा जगाती पुस्तक।

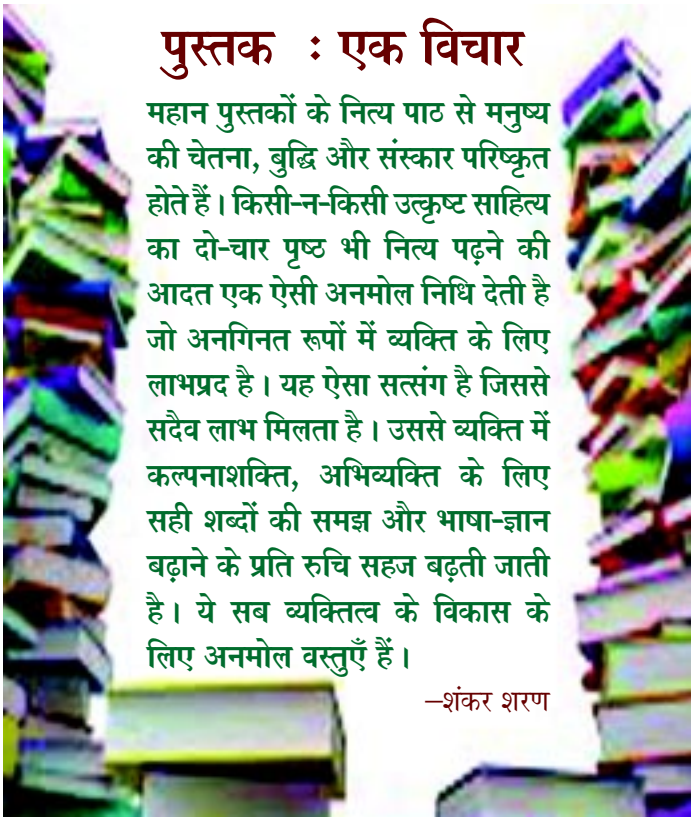

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070